* अध्याय-निसरा *

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

विभाजन सम्बन्धी उपन्यासों का संक्षिप्त सर्वेक्षण

भारत विभाजन की माँग, उसके किए गए आन्दोलन और उस आन्दोलनसे उत्पन्न स्थिति एवं परिणाम को देखनेसे हमें भारत - विभाजन की तीन अवस्थाएँ ज्ञात होती हैं। पहली अवस्था भारत - विभाजन से पूर्व की अनिश्चित्त अस्थिर अवस्था, दूसरी भारत - विभाजन के समय की हत्याएँ, लूट - पाट, अग्निकाण्ड, अपहरण, बलात्कार जैसे नग्न्य कर्मों की और तीसरी है - पाकिस्तान से आनेवाले शरणार्थियों के पूर्नवास की अवस्था। इसतरह निम्नलिखित उपन्यासों में भी लेखकों ने इन्हीं में से एक अवस्था को उपन्यास में प्रमुखता दी है।

"और इन्सान मर गया", "झूठा - सच", "तमस" आदि उपन्यासों के साथा - साथ गुरुदत्त जी का "देश की हत्या", कृष्ण बलदेव वैद जी का गुजरा हुआ जमाना राही मासूम रजा का "आधा गाँव" तथा जगदीश चन्द्रजी का "मुट्ठीभर कौंकर कौंकर" आदि उपन्यासों में भी देशविभाजन की समस्या की यथार्थ तथा व्यापक चित्रण मिलता है।

"देश की हत्या" [गुरुदत्त]

"देश की हत्या" गुरुदत्त जी ने १९५३ में लिखा है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक गुरुदत्त जी ने लाहौर, पश्चिम पंजाब, दिल्ली आदि को केन्द्र में रखकर देश - विभाजन की समस्या को प्रस्तुत किया है। "देश की हत्या" पंजाब के डायरेक्ट एक्शन के वक्त काँग्रेसी नेताओंके झूठे दिलासों, केन्द्रीय सरकार की उपेक्षाओं और पश्चिमी पंजाब से हिन्दुओं के उखड़ने की दर्दनाक कहानी है। इस समय शरणार्थियों की मानसिक स्थिति, उनकी प्रखर प्रतिकार - भावना आदि का बड़ा मार्मिक चित्रण किया गया है।

देश को अखण्ड भारत और "पाकिस्तान हमारी लाशोंपर बनेगा" कहनेवाले कॉंग्रेस नेताओंद्वारा अकस्मात देश का विभाजन स्वीकार लेना तथा पाकिस्तान में गए प्रदेश के हिन्दुओंको उन अन्धे नृशंस भेड़ियों के अत्याचारों के दाँवपर लगाना देश की हत्या ही थी।[1] अत: इस उपन्यास के कथासूत्र में कॉंग्रेस की मुस्लिम - पक्षी नीति, पंजाब में डायरेक्ट ऐक्शन के समय हुई हत्याएँ, लूट और बलात्कार के रोमांचकारी दृश्यों नृशंसता एवं अराजकता तथा गांधीजी और अन्य नेताओं द्वारा हिन्दू जनता के विश्वासों का पतन आदि को चित्रित किया गया है।

लेखक ने उपन्यास में हिन्दुओं की जागृत संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के युवकों की प्रतिकारात्मक नीति, साहस, शौर्य तथा आत्माभिमान को भी चित्रित किया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्योंसे प्रभावित होना, उनके प्रति सहानुभूति दिखाना आदि से लेखक की राष्ट्रीय विचारधारा की दृष्टि प्रतीत होती है। चेतनानन्द प्रस्तुत उपन्यास का प्रमुख पात्र है।[2] वह पहले कॉंग्रेस का प्रचारक था, लेकिन बादमें कॉंग्रेस के विश्वासघात से कॉंग्रेस का कट्टर विरोधी बन गया।

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में विभाजन के समय की मुस्लिममनोंकी धर्मान्धता को रावलपिण्डी जिले के गूजर खाँ कस्बे में रहनेवाले कर्मसिंह के उक्त कथनसे स्पष्ट किया है - "जब तक इस्लाम के साथ टक्कर नहीं है, तब तक ही ये मुसलमान तुम्हारे मित्र हैं। इस्लाम के लिये ये अपने सगे बाप का भी खून कर देंगे।[3] अन्तमें भैयाजी के चरित्र - चित्रण के साथ - साथ शरणार्थियों के भारतागमनपर उनकी दुर्दशा का मार्मिक चित्रण भी किया गया है। - भैयाजी की प्रतिक्रियात्मक, बुध्दि को चित्रित करते, चेतनानन्द कहता है -

"ये महाशय निर्वासितों के आँखों देखे दृश्य सुनाते - सुनाते रोने लगे थे। औरतें किसप्रकार सड़कों के किनारोंपर बच्चे जनती हैं, भैय्या जीने देखा है किसप्रकार दिल्ली के स्टेशन के वेटिंग रूम की टट्टियोंमें बैठीं माताएँ बच्चों को दूध पिलाती हैं, कैसे बाप बेटा और पतीहू सर्दी

के मारे एकही रजाई में ठिठुरते रात बिताते हैं; औरत के लिये टट्टी पेशाब को स्थान न होने से वे सड़कों के किनारे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं. कैसे मकान, वस्त्र और भोजन अथवा अन्य साधन न होने से सहस्त्रों की संख्या में लोग रोगग्रस्त हो, वेग से मौत की ओर जा रहे हैं । लखपति आज नंगे हो गए हैं; मालिक नौकर भी नहीं रहे; स्वस्थ दृष्ट - पुष्ट भूखसे व्याकुल हो, हड्डियों का कंकाल बन गए हैं। सबकुछ देखने से उत्पन्न हुई, उसके हृदय की टीस आँखोंसे अश्रु बन प्रकट होती थी। उसका कहना है कि इस दु:ख को मिटाना ठीक है, पर इसका कारण इससे पृथक बात है। उस कारण को ही वह ढूँढता फिरता है और उसको दूध में से मक्खी के समान निकाल देना चाहता है।"[3]

एक ओर तो कॉंग्रेस नेताओं ने हिन्दुओं के साथ विश्वासघात किया, तो दूसरी ओर मुस्लिम - लीग की भी स्थिति इसप्रकार की ही है। इस दल के नेता धर्म का अनुचित अर्थ लगाकर किसप्रकार नासमझ जनता को बहकाया करते थे, इसे एक मौलवी के द्वारा व्यक्त किया गया हैं, - जो लाहौर के राजगढ़ी के लोगों को बता रहा था, "आप लोगों को काफीरों की लुटी हुई धन - दौलत और उनसे छीनी हुई औरतें हलाल हैं। इस हिन्दुस्तान में हमारे बुजुर्गों ने इस्लाम का आलम गाड़ा था॥ उन्होंने सात सौ साल तक इस जमींदार इस्लाम का डंका बजाया था॥ अब फिर मौका आ गया है॥ खुदा के फज्लसे हिन्दुस्तान के एक छोटेसे हिस्से में फिर इस्लामी हुकुमत कायम होने जा रही है। इसके लिये जरूरी है कि कुफ्र न रहे॥ ऐसा करनेमें गाजियों और शहीदों दोनों को बहीश्त मिलेगा॥[4]

मुस्लिम - लीग की इस नीति ने हिन्दुओंमें प्रतिकार - भावना को जन्म दिया, और वे मुसलमानों को अपना शत्रु समझने लगे थे॥ दिल्ली में मुसलमानों की संख्या काफी थी, पाँच सितम्बर १९४७ ई. को दिल्ली में हिन्दू मुसलमानों में झगड़ा हो गया। मुसलमानों ने बन्दूकोंसे हमला किया।

फलस्वरूप दूसरे दिन से हिन्दुओं ने मुसलमानों पर संगठित रूपसे आक्रमण कर दिया। ८: सितम्बर को मुसलमानों ने मस्जिदों व मकानों में मोर्चे बाँधकर मुकाबला किया, "पर सात सितम्बर को झगड़े का रूप बदल गया। करोलबाग, पहाड़गंज सब्जी मण्डी, सदर बाजार आदि मुसलमानी मुहल्लोंपर हिन्दू लोग आक्रमण करने लगे और पंजाब में हिन्दुओं के साथ जो हुआ था, वह सब कुछ मुसलमानों के साथ करने लगे।" [५]

निष्कर्ष :-

"देश की हत्या" उपन्यास लेखक के मन की परिस्थितिजन्य प्रतिक्रिया का रूप चित्रित करता है। उनके प्रस्तुत उपन्यास में समाज की कटुता, जीवन की यथार्थता को चित्रित किया गया है। घटनाओंका स्वाभाविक - चित्रण अनूठी, वर्णन - शैली, समाज की कटुता, भ्रष्टाचार आदि का मार्मिक चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है। मुस्लिमोंके बारे में कांग्रेस का मत देश की जनता के साथ वचनभंग आदि ऐतिहासिक सत्य घटनाएँ हैं। "देश की हत्या" में वर्णित ईर्ष्या, द्वेष, निर्दयता, अहंकार, व्यभिचार आदि उपन्यासकार की गम्भीर विचारधारा तथा कल्पनाशक्ति लता का प्रतिक हैं।

लेखक वातावरण चित्रण में मनुष्य की आन्तरिक - स्थिति, संस्कार और अनुभूतियों को ज्यादा महत्त्व देता है बाह्य स्थिति को नहीं। गुरुदत्त पंजाबी होने के कारण "देश की हत्या" में प्रादेशिक भाषा की प्रभाव है।

"देश की हत्या" में लेखक गुरुदत्त जी ने कांग्रेस दल की परस्पर - विरोधी नीतियों के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिति और मुस्लिम लीग की पाकिस्तान के स्वरूप की अस्पष्ट परिकल्पना का सूक्ष्म चित्रण किया है। रावलपिण्डी, लाहौर तथा दिल्ली आदि तीन अलग - अलग स्थानों के साम्प्रदायिक दंगों का चित्र प्रस्तुत करके देश - विभाजन की समस्या को चित्रित किया गया है। - रावलपिण्डी जिला, जहाँ हिन्दुओं की जान और माल की उपार हानि हुई, लाहौर में हिन्दुओं और मुसलमानों की संख्या

बराबर थी, वहाँ हिन्दुओं ने अन्तिम दिनतक डटकर मुकाबला किया। दिल्ली, जहाँ सरकारी सहानुभूति के बावजूद मुसलमान अधिक दिनोंतक हिन्दुओं का मुकाबला नहीं कर सके। आगजनी, नारी-अपहरण, बलात्कार, नारी-विक्रय, लूटमार आदि का यथार्थ चित्रण करना इस उपन्यास का उद्देश्य है।

"गुजरा हुआ जमाना"

[कृष्ण बलदेव वैद]

"गुजरा हुआ जमाना" वैद जी ने सन् १९८१ ई. में लिखा है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक बलदेव वैदजी ने पश्चिमी पंजाब के, जो विभाजन के बाद पश्चिमी पाकिस्तान बना, एक गाँव में विभाजनद्वारा हुए परिवर्तनोंका व्यापक चित्रण प्रस्तुत किया है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में इस गाँव की हिन्दू-मुस्लिम जनता के विभाजन से पूर्व दो-तीन वर्षों के स्वस्थ सम्बन्धों तथा देश-विभाजन के कुछ काल बाद की बिगड़ी हुई परिस्थितियों का चित्रण किया है।

लेखक ने इस उपन्यास में स्पष्ट किया है कि, गाँव की साम्प्रदायिक सद्भावना कैसे खत्म हो रही थी, देश विभाजन के पूर्व अफवाहों ने कैसे जोर पकड़ा, सारे गाँव मे पाकिस्तान बनने की अफवाहें फैल चुकी हैं। इन अफवाहों को सुनकर गाँव के लोगोंको मुसलमानोंपर कोई भरोसा नहीं रहा, क्योंकि इस कस्बे में मुस्लिम बहुसंख्यक थे। इसलिए युवकों ने पढ़ाई के लिये अमृतसर जाकर रहने का निर्णय लिया। दो सिख युवक हरदयाल और जीता करते हैं - "लाहोर मुसलमानों का शहर है, अमृतसर खालसों का ..... हिन्दू कमजोर और बुजदिल हैं। सिख ही हिन्दुओं की रक्षा कर सकते हैं।"[६]

पाकिस्तान बनने की अफवाह से गाँव के मुसलमानों और हिन्दुओं को विश्वास हो गया था कि पाकिस्तान अवश्य बनेगा, इसीकारण हिन्दू अपना मकान आदि बेचकर सुरक्षित स्थानपर चले जाने का विचार करने लगे, पर हिन्दुओं की जमीन कोई खरीद नहीं रहा था। "जब तक पाकिस्तान का फैसला नहीं होता, कोई जमीन या मकान को खरीदेगा नहीं।"[७] बीरू के बाबा का यह कथन वास्तविक स्थिति को चित्रित करता है, लोगों की स्थिति सन्देहमय थी, उनके भावोंसे खतरे का आभास हो रहा था।

11825

अफवाहों की तीव्रतासे गाँव में वातावरण तनावग्रस्त हो चुका था, इन परिस्थितियों को देखकर उसी गाँव का विश्वा नामक पहलवान हिन्दुओं का नेता बन गया था, और मुसलमानों में हकीम को नेता माना जाने लगा। उपन्यास का नायक बीरू भी अपने गाँव की इस स्थिति को देखकर बड़ा दुखी है, क्योंकि उस सारे इलाके में मुसलमानों का बड़ा जोर है। दंगों का खतरा वहाँ दिन - ब - दिन बढ़ता जा रहा है। "पाकिस्तान बनने से पहले ही वहाँ पाकिस्तान बना हुआ है।"[८] बीरू सोचता है - "अब तो हिन्दू और सिख मन - ही - मन, यहाँ से भागने की सोच रहे हैं, पाकिस्तान के डर से।"[९]

हिन्दू और मुसलमानों में विभाजन के समय एक - दूसरे के प्रति घृणा बढ़ रही थी। नायक बीरू रेलसे लाहौर जा रहा था, तब डिब्बे में हिन्दु-मुस्लिम यात्री बैठे थे। एकाएक मुस्लिम यात्रियों ने पाकिस्तान के नारे लगाने शुरू कर दिये। एक हिन्दू को नारेबाजी अच्छी नहीं लगती वह कहता है - "पाकिस्तान अभी बना नहीं और ये मुसले ..... । इतना सुनते ही डिब्बे के मुसलमान चिल्लाये। एकने कहा - खबरदार जो किसी खबीस ने मुसलमानों को मुसला कहा तो दूसरा बोला - खबरदार जो पाकिस्तान के खिलाफ कोई काफीर बोला तो। तीसरा बोला - खबरदार अगर किसीने हमारी कोई बुराई की तो। हम उसे गाड़ी के नीचे फेंक देंगे। पाकिस्तान जिन्दाबाद - कायदे आजम जिन्दाबाद।"[१०] जब डिब्बे में पाकिस्तान को लेकर तनावपूर्ण वातावरण उत्पन्न हो गया था तब डिब्बे में स्थित एक वृद्ध बाबा तनाव को कम करने के उद्देश्य से कहता है - "आजकल सब हिन्दू बहुत डरे हुए हैं, क्या मर्द क्या औरत। सबको दिन - रात यही डर लगा रहता है कि पाकिस्तान बन जाएगा, पाकिस्तान बन जाएगा ..... अब इन दालखोरों को कौन समझाये कि पाकिस्तान का मतलब यह नहीं है कि हम आपस में बोलना - चालना ही बन्द कर दें।"[११]

मुसलमानों में भी ऐसे लोग थे जो साम्प्रदायिक दंगों का विरोध करते थे, इसे रोकनेका प्रयत्न करते थे। बीरू का दोस्त असलम और उसके साथी उस गाँव में शान्ति बनाये रखना चाहते थे॥ वे बीरू को गाँव छोड़कर लाहौर न जाने की सलाह देते हैं, - असलम का एक साथी कहता है - "अगर यह कस्बा न रहा

तो लाहौर भी नहीं रहेगा यानी कि अगर पाकिस्तान बन गया और दंगे फसाद शुरू हो गये तो कालेज - वालेज सब बन्द हो जाएँगे और एक नहीं कई देवियों को कुओं में कूदना पड़ेगा ..... पाकिस्तान बने न बने, हमें बेवकूफ नहीं बनना चाहिए, यानी कि किसी के भड़कावे में आकर मारकाट शुरू नहीं कर देनी चाहिए।"[१२]

इन अमन कमेटियों के बनने के बाद भी गाँव में फसाद शुरू हो गये। हिन्दू अपनी सुरक्षा का मार्ग ढूँढने लगे, किसी हिन्दू के सुरक्षित मकान में छिपने लगे। बीरू के घर में कुमारी छुपी हुई थी। दंगों की तीव्रता को देखकर कुमारी कहती है - "न जाने कितने घण्टे और यहीं बन्द रहना पड़ेगा या कितने दिन। अगर मारे न गए तो मर जाएँगे, भूख प्यास से ही अगर बच भी गये तो जबरन मुसलमान बना दिये जाएँगे, पहले गोमाँस कुछ में ठूँसा जाएगा, फिर कलमा पढ़ाया जाएगा।"[१३]

गाँव के मुसलमान हिन्दू लड़कियों के अपहरण के लिए योजना बना लेते हैं। जब इसका पता हरदयाल को लगता है तो वह बीरू को सावधान करता है, - "हरामियों ने लिस्टें बना रखी हैं, सब लड़कियों की ..... अमृतसर में हिन्दुओं और सिखों ने भी वैसी ही लिस्टें बनाई थीं।"[१४] लेखक को यहाँ यह स्पष्ट करना है कि, अमृतसर में मुसलमानों पर हुए अत्याचार का बदला, इस कस्बे के मुसलमान हिन्दू तथा सिखोंसे ले रहे थे। इसी समस्या को लेखक ने और एक उदाहरण द्वारा प्रस्तुत किया है।

एक दिन शाम के समय गाँव के बाहर मुजाहिदों के ढोल बज उठे। इस ढोल की आवाज के कारण हिन्दू भयभीत हो गये। बीरू को हकीम की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। - "पहले साहनियों की गली का सफाया करो। एक - एक मकान की तलाशी लो, एक - एक कमरे कोठरी की। आग हवा का रुख देखकर लगाइये। कहीं किसी मोमिन का मकान न जल जाए। गद्दारों की, खबर बादमें लेंगे। पहले काफिरों को ठिकाने लगाओ। ..... इस्लाम खतरे में है। यह मत भूलो कि उधर तुम्हारे भाइयों को भूना जा रहा है, तुम्हारी बहनों - बेटियों की बेइज्जती की जा रही है। यह मत भूलो कि सिख और साँप मे कोई फर्क नहीं। अपने कमान यह मरदूद अपने साथ नहीं ले जा सकते। लूट खसूट बाद में भी हो सकती है। दिन में भी हो सकती है।

पहले मर्दों को मारो, फिर औरतों और बच्चों को।"[१५]

लेखक ने यहाँ यह स्पष्ट किया है कि, धर्म का झूठा सहारा लेकर हकीम जैसे नेता लोग ही किसप्रकार नासमझ धर्मान्ध जनता को भड़काकर दंगों को अधिक बढ़ावा देते हैं। लेखक का दृष्टिकोण यहाँ धार्मिक अन्धविश्वास पर कटु आलोचना करना है।

हकीम के आदेश के अनुसार रातभर लड़ाई होती रही। मार-काट, आगजनी आदि का शोरगुल रातभर गाँव के लोग सुन रहे थे॥ लेखक ने दंगों के बाद होनेवाले जाँच - पड़ताल का व्यंग्य, तथा हिन्दू और मुसलमानों में स्थित प्रतिशोध कि भावना को बीरू की विचारधारा द्वारा प्रस्तुत किया है। - बीरू सोचता है, "सुबह होते ही हिसाब - किताब शुरू हो जाएगा। लाशों की गिनती। कितने हिन्दू, कितने सिख। कुछ तो मुसलमान भी होंगे। एक - एक के बदले में दस - दस मारने के इरादे। उस तरफ हमारे तो इतने मारे गये, यहाँ क्यों नहीं ?"[१६]

गाँव में शान्ति बनाये रखने के लिये अमन कमेटी बनायी गयी। वहाँ के हिन्दू ही अधिक आतंकित थे थे,इसलिये उन्होंने ही अमन कमेटी बनाने में पहल की। अमन कमेटी की बड़ी कोशिशों के बावजूद भी गाँव में भयंकर दंगा फसाद हुआ, अनेक मकानों को आग की भेंट किया गया; औरतों की इज्जत लूटी गयी अन्तमें इन सबसे मुक्ति पाने के हेतु से अल्पसंख्यक हिन्दू स्थानीय स्कूल में एकत्र हुए ताकि वे अपने वतन को हमेशा के लिए छोड़कर हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करें।

* * निष्कर्ष :

लेखक कृष्ण बलदेव वैद जी ने "गुजरा हुआ जमाना" उपन्यास में गाँव के साम्प्रदायिक संबंधों को उजागर किया है, जिसमें पहले हिन्दू - मुस्लिम शान्ति से रहते थे, युवा - वर्ग साम्प्रदायिकता का विरोध करता था, लेकिन उसी गाँव के हिन्दुओं को विभाजन के समय मुसलमानों की भड़की हुई धार्मिक भावनाओं, लूट - पाट आगजनी के कारण हारकर अपने वतन आदि को छोड़कर भागना पड़ा। इसतरह प्रस्तुत उपन्यास में पश्चिमी पंजाब के एक गाँव के

लोगों की विभाजन के पूर्व की तथा विभाजन के बाद की अनिश्चित, अस्थिर स्थिति को चित्रित किया है।

लेखक ने देश - विभाजन के बाद की हिन्दू - मुस्लिम साम्प्रदायिक विद्वेष को प्रस्तुत उपन्यास में पश्चिमी पंजाब के एक कस्बे के हिन्दू - मुस्लिम सम्बन्धोंद्वारा स्पष्ट किया है। एक - दूसरे के वार्तालाप तथा अफ़वाहों के कथनद्वारा लेखक ने वातावरण की निर्मिति की है। घटनाओंका स्वाभाविक चित्रण बन पड़ा है, जिससे लेखक की कल्पनाशक्ति की गहनता स्पष्ट होती है। विभाजन के पूर्व की स्थिति, विभाजन के आस - पास के काल की लूट - मार, आगजनी, अपहरण, बलात्कार, विभाजन के बाद लोगों का विवश होकर अपने वतन से बिछुड़ना अथवा जबरदस्ती निकाल देना आदि का कुप्रभाव गाँव के सामाजिक सम्बन्धों तथा जीवन - मूल्यों पर किसप्रकार पड़ा यही स्पष्ट करना लेखक का उद्देश्य है। उपन्यास में में चित्रित विभाजन की समस्या का यथार्थ तथा वास्तविकचि चित्रण देखने से लेखक की तीव्र कल्पनाशक्ति का परिचय मिलता है।

उपन्यास के प्रकाशन काल को देखने से हमें यह ज्ञात होता है कि देश - विभाजन की समस्या में कितनी तीव्रता थी, जिसने विभाजन के ३३ वर्ष बाद भी लेखक को प्रभावित किया।

* * *

"आधा गाँव"

[राही मासूम रजा]

"आधा गाँव" उपन्यास राही मासूम रजा जी ने सन् १९६६ में लिखा है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में गाजीपुर से बारह - चौदह मील की दूरी पर स्थित गंगौली नामक गाँव के मुस्लिमों की विभाजनसे उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है गंगौली के मुस्लिम समाज की विभाजन के प्रति इच्छा - आकांक्षाएँ, उनकी मानसिकता आदि का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत किया गया है। पाकिस्तान के निर्माण की इन लोगों के मन में भिन्न - भिन्न कल्पनाएँ थीं। - अब्बास गफ़ूरन बुआ से कहता है - "एक मरतबा पाकिस्तान बन गया तो मुसलमान ऐश करेंगे, ऐश।"[१७]..... मिगदाद सैफुनिया से कहता

है - "पाकिस्तान बन जाय दे, बड़ा मजा आई।"[१८]

लेखक ने विभाजन के बाद परिवार में उत्पन्न हुई भिन्न - भिन्न मनोवृत्तियों को प्रस्तुत किया है जिसमें कुछ सदस्य पाकिस्तान जाने को राजी है, तो कुछ भारत में ही रहने को। - "एक दिन सफिरवा, सगीर फातमा सहित पाकिस्तान के लिए चल पड़ा। बछनिया बहुत रोई। रब्बन बीने सफिरवा को समझाया कि बाप - दादा की चौखट नहीं छोड़ी जाती। मगर वह नहीं माना और चला गया। दिल्ली और अमृतसर के बीच रेल कहीं रुकी। बच्छन और सगीर फातमा सरहदसे इधर ही रह गई। सफिरवा बच्चों की लाशें लेकर सरहद पार कर गया।"[१९]

लेखक राही मासूम रजा ने "आधा गाँव" उपन्यास में विभाजन के समय उत्पन्न परिस्थितियों का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। उन्हों ने कहा है कि उस समय दंगे, लूट - पाट, आगजनी और कत्ल की इतनी अधिक घटनाएँ हो रही थीं कि उनके बारे में सही आँकडे भी ज्ञात नहीं हो सके। चारों तरफ इतने बड़े - बड़े शहर धायँ - धायँ जल रहे थे कि उस आग में बच्छन और सगीर फातमा एक तिनके की तरह पड़ी और भकसे उड़ गई ..... अनारकली का नाम सगीर फातमा था या रजनी कार या नलिनी बनर्जी था - अनारकली की लाश खेत में ही, सड़कपर थी, मस्जिद और मन्दिर में थी और उसके नंगे बदनपर नाखूनों और दातों के निशान थे। लोगों ने खूनसे भीगे हुए गरारों, शलवारों और साड़ियों के टुकडों को यादगार के तौरपर सन्दूकों में रख लिया था।"[२०]

पाकिस्तान बन जानेपर भी हिन्दुस्तान के मुसलमानों की स्थिति डाँवाडोल ही रही, वे न यहाँ के रहे न वहाँ के इस समस्या को लेखक ने गंगौली गाँव के एक वृद्ध मुसलमान अब्बू मियाँ के कथनद्वारा स्पष्ट किया है, - "जिन्ना साहब तो हाथ झाड़कर चले गये कि यहाँ के मुसलमान, खुदा न करे, जहन्नुम में जाएँ। पाकिस्तान बनाने के वास्ते वोट यहाँ के मुसलमान दें और जब पाकिस्तान बन गया, तब जिन्ना कहते हैं कि यहाँ के मुसलमान भाड़ में जाएँ।"[२१]

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में यह भी स्पष्ट किया है कि, पाकिस्तान बन जानेपर न केवल अधिकांश मुसलमान हिन्दुओंसे अलग हुए, बल्कि मियाँ - बीवी, - बाप - बेटा और भाई - बहन भी अलग- अलग हो गये। - गंगौली के हकीम साहब ज्वाद मियाँ से अपना दुःख व्यक्त करते हैं। - हमने कुछन को बहुत समझाया - "ऐ बेटा! तुझे पाकिस्तान जाने की कोई जरुरत नहीं । इसपर वह बोला, यहाँ [हिन्दुस्तानमें] मुसलमानों की तरक्की का रास्ता बंद हो गया है।" २२ बेटा पाकिस्तान चला जाता है, हकिम साहब पहले से अधिक से भी अधिक दुःखी हैं और अल्लाह से अर्ज कर रहे हैं कि वह अब आकर अपने बाल - बच्चों को भी ले जाए तो हम चैन की साँस लें। "यह पाकिस्तान तो हिन्दू और मुसलमानों को अलग करने के लिए बना था। बाकी हम तो यह देख रहे हैं कि यह मियाँ - बीवी, बाप - बेटा और भाई-बहन को अलग कर रहा है।" २३

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने विभाजक के बाद गंगौली गाँव के मुस्लिमों की सामाजि, आर्थिक, धार्मिक स्थिति में हुए परिवर्तन का यथार्थ चित्रण किया है। पाकिस्तान बंद जानेपर उस गाँव के असंख्य शिक्षित युवकों के पाकिस्तान चले जाने से वैवाहिक क्षेत्रमें रिक्तता आ गयी थी, युवतियाँ कुँआरी रहनेपर विवश हैं, विवाह आदि के अभाव में सामाजिक जीवन जटिल हो गया है। आर्थिक स्थिति के कारण धार्मिक कार्यों में पहले जैसा उत्साह नहीं रहा, धनाभाव के कारण लोग दुकानदारों से उधार लेने के लिए विविश हैं। - "हर घर में अम्बारों बक्स थे। हर जनाने कमरबन्द में कुंजियों का भारी गुच्छा था, पर बक्स खाली थे। तालों की जरुरत न थी, पर औरतें कुंजियों के गुच्छेसे चिमटी हुई थीं, क्योंकि वही उनकी खुशहालि के जमाने की एक यादगार रह गया था।" २४

निष्कर्ष :-

"आधा गाँव" सफल आंचलिक उपन्यास है। इसमें लेखक ने विभाजन के पूर्व की तथा विभाजन के बाद हुई घटनाओंको, गाजीपुर के एक गंगौली नामक गाँव को केन्द्र में रखकर वहाँ के मुस्लिम लोगों की समस्याओं द्वारा चित्रित किया है। विभाजन के वक्त की वास्तविक घटनाएँ, पारिवारिक कहानियाँ, विभाजनसे हुए सामूहिक जीवन का उतार - चढ़ाव, विभाजन के कारण ...

मनोव्याधिग्रस्त मुस्लिम लोगों का अन्तर - बाह्य संघर्ष आदि को लेखक ने अनेक उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है। उदाहरणस्वरूप, विभाजन के समय हुए सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास को लेखक ने गंगोली गाँव में मुहरम के समय उखड़े मातम के रूपमें चित्रित किया है।

गंगोली गाँव के मुसलमान जो, विभाजन के समय शरीर और मनसे हारे - टूटे तथा अन्तर -बाह्य संघर्षोंसे जूझते हुए भी उनमें अपने गाँव में ही सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ जीने की लालसा थी जैसे वे खुशियों में जीते हैं। वैसे ही गम में भी जी लेते हैं। - इसका बड़ा यथार्थ चित्रण लेखकने प्रस्तुत उपन्यास में किया है। लेखक का उद्देश्य केवल व्यक्ति के चरित्र को ही नहीं तो गाँव को भी एक पात्र के रूपमें प्रस्तुत करना है।' "आधा गाँव" उपन्यास में उर्दू भाषा का ही अधिक प्रयोग हुआ है, जो सुसंस्कृत मुस्लिम परिवार की पारिवारिक तथा व्यावहारिक भाषा का प्रतीक है। मुस्लिम - लीग की नीति, पाकिस्तान का निर्माण तथा कट्टर साम्प्रदायिकता आदि के चित्रण में लेखक का राष्ट्रवादी दृष्टीकोण ही उभरा है।

इसतरह "आधा गाँव" में गंगोली नामक गाँव के मुस्लिमों की विभाजन से पूर्व की स्वस्थ परिस्थितियाँ, उनके रीति - रिवाजों, इच्छा - आकांक्षाओं, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों तथा विभाजन के बाद उनमें होनेवाले परिवर्तनों आदि का सूक्ष्म चित्रण करना ही लेखक का उद्देश है।

****

"मुट्ठी भर कांकर"

(जगदीश चन्द्र)

"मुट्ठीभर कांकर" उपन्यास में जगदीश चन्द्र ने विभाजन के बाद उत्पन्न शरणार्थियोंकी पुनर्वास की समस्या तथा शरणार्थियोंद्वारा उन समस्याओं का निराकरण आदि का विस्तृत चित्रण किया है। विभाजन

विभाजन के तुरन्त बाद भारत सरकारने शरणार्थियों की रहने आदि की कोई योजना नहीं बनायी थी, इसलिए विभाजन की घोषणा के बाद कुछ दिनोंतक शरणार्थी अपनी इच्छासे किसी भी शहर में पहुँचते रहे। सरकारद्वारा निर्मित रिफ्यूजी कैम्प अपर्याप्त रहे। शरणार्थियों को जहाँ कहीं जगह मिली, वे वहाँ टिक गये, किसी मैदान, पार्क या जंगल को ही अपना बसेरा बना लिया। इन्हीं शरणार्थियों का जो पश्चिमी पंजाब सीमाप्रान्त, बलूचिस्तान आदि से उखड़कर दिल्ली में आ बसें, उन शरणार्थियोंकी दयनीय स्थिति का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने किया है, - उन शरणार्थियों के पास कुछ भी नहीं था, अपने रहने तथा खाने का बंदोबस्त तक नहीं कर पा रहे थे। लेखक कहता है कि, उनके पास जो भी साधन या सामान था वह मुट्ठी भर कौकर के समान था।[२५]

प्रस्तुत उपन्यास में जगदीश चन्द्र ने केवल पंजाबी शरणार्थियोंकी समस्याओं को ही चित्रित नही किया है साथ ही उनके आगमनसे स्थानीय लोगों पर होनेवाली प्रतिक्रियाओंका भी चित्रण किया है। दिल्ली के पास दारापुर नामक गाँव है। इस गाँव का दुकानदार दुनीचन्द उर्फ लाला दिल्ली में शरणार्थियों को देखकर अपने अनुभव बताता हुआ गाँव के एक वयोवृद्ध व्यक्तिसे कहता है - " ताऊ, कल मेरे साथ चलियों और अपनी आँखों देख लियो। चाँदनी चौक, खारी बावडी, कश्मीरी दरवाजा, पहाड़गंज, सदर बाजार, करोलबाग सब पंजाबियों से भरे पड़े हैं। रेल टेशनों, सड़कों, लाल किले के मैदान - सब जगह पंजाबियों के टिड्डी दल बैठे हैं। जिन्हें शहर और आबादी में जगह नहीं मिली, वे जंगलों को साफ करके घर बना रहे हैं"। पूसा फार्म के दरवाजे तक पहुँच गये हैं।[२६]

दिल्ली पहुँचनेपर शरणार्थियों ने आजीविका के लिये बहुत कष्ट उठाये। छोटे - मोटे और तुच्छ समझे जानेवाले काम भी किये, पर शरणार्थीसे पुरुषार्थी बनने की उनकी लालसा अदम्य रही। पंजाबी सरदार अतरसिंह अपनी साइकिल के कैरियर पर कपड़े की गठरी बाँधकर, शोख रंग

के ब लहंगी सजाकर दारापुर गाँव पहुँचा तो उसे गाँव के लोगों ने घेर लिया और गलियों में जाने नहीं दिया। गाँव का दुकानदार दुनीचन्द आदेशात्मक स्वरमें बोला, - "ए सरदार घसीट ले अपनी सैकल यहाँ से। ये सरीफ्फों का गाँव है मेरी दुकानपर गाँव की बहू - बेटियाँ और चौधरानियाँ सौदा लेने आती हैं।[२७] लेखक ने यहाँ दुनीचन्द के माध्यम से गाँव की सामूहिक मानसिकता को चित्रित किया है, जो रूढ़ियों और परंपराओं से ग्रस्त है।

दुनीचन्द दुकानदार होने के कारण शरणार्थियों को धोखेबाज सिद्ध कर रहा है, ताकि अपनी दुकान अच्छी चले। वह कहता है, "एक दिन पंजाबी हमारी बहू - बेटियों को भी मण्डी का माल बना देंगे। इनका कोई धर्म - ईमान नहीं है। व्यापार इन्होंने बिगाड़ दिया है। पहाड़गंज के चौक में थाने के पास एक पंजाबी रेढ़ी पर लाल ब साबुन ढेर लगा कर बेच रहा था। कम्पनी के अँग्रेजी साबुन की तरह ही रंग, वैसा ही ऊपर कागज, लेकिन कीमत आधी "[२८]

पहले - पहले शरणार्थियों को स्थानीय लोगों ने अविश्वास की दृष्टि से देखा, पर धीरे - धीरे दोनों में एक - दूसरे के प्रति सहानुभूति, सहयोग की भावना उत्पन्न हुई। शरणार्थियों ने स्वयं को स्थापित करने के लिये इतना परिश्रम किया कि स्थानीय लोगों के मुँहसे स्वयं ही प्रशंसा के शब्द फूट पड़े। शरणार्थी को हमेशा कोसनेवाला दुनीचन्द, शरणार्थियों के सम्पर्क में आनेपर, उनकी बातें सुनकर उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहता- "पंजाबियों की सारी बुरी बातें सीख रहे हो, उनकी एक अच्छी बात भी सीख लो॥ वे खाली जगह मिलते ही रातों रात मन्दिर या गुरुद्वारा खड़ा कर देते हैं। पास - पड़ोस तक को पता उस समय चलता है, जब वहाँ भजनकीर्तन शुरू हो जाता है।"[२९]

निष्कर्ष :-

विभाजन के कारण विस्थापितों को स्थापित करने के लिये दिल्ली के पासवाले गाँवों की जमीन एक्वायर करने का निर्णय सरकार कर लेती है। सब शरणार्थी गाँववालों के लिये पंजाबी हैं, आक्रमणकारी हैं, उनकी जिंदगी को नष्ट करने के लिये आये हैं॥ पंजाबियों के प्रति फैली दहशत का लेखक ने सूक्ष्म चित्रण किया है॥ इस चित्रण में लेखक के यथार्थवादी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति होती है। साथ ही लेखक ने विस्थापितों को स्थापित करने के लिये मूल निवासियों को उनकी जमीनसे उनके जीवन - मूल्योंसे उजाड दिये जाने, यानी कि विस्थापितों के पुर्नवास और स्थापितों के विस्थापित होने की एक द्वन्द्वात्मक स्थिति को लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है। इसमें लेखक की कल्पनाशीलता का परिचय मिलता है।

उपन्यास में प्रस्तुत शरणार्थियों का प्रतिनिधित्व करनेवाले अतरसिंह और रामदयाल दोनों की कर्मठता, अपने उद्योगों को बढ़ाने की कुशलता, दिल्ली के अपनद चौधरियों के स्वभाव, उनकी जीवनपध्दतियाँ आदि के चित्रण में लेखक के स्वानुभव तथा सूक्ष्म विचारधारा का परिचय मिलता है।

"मुट्ठी भर कौकर" उपन्यास में विभाजन के बाद शरणार्थियों की लूट - पार कर अपने गाँव आदि को छोड़कर दिल्ली में आगमन, कैम्पों, मैदानों, सड़कों कहीं भी जगह मिले, वहीं रहना, जीविका के लिये कठोर परिश्रम करना, स्थानीय लोगों का अविश्वास सहकर अपनी व्यवहार कुशलता तथा पुरुषार्थ से अपने को विस्थापित से स्थापित करने का प्रयास करना आदि का यथार्थ चित्रण करना ही लेखक का उद्देश्य है।

इसतरह उपर्युक्त चारों उपन्यास विभाजनसम्बन्धी उपन्यासों में हिन्दी के मौलिक उपन्यासों में से हैं।

*****

-: सन्दर्भ - सूची :-

१.	डॉ. हेमराज निर्मम,	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन"	संजय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८७	पृ. ५४ से उद्धृत
२.	ब्रजभूषण सिंह आदर्श,	"हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासोंका अनुशीलन".	रचना प्रकाशन प्रथम संस्करण १९७०	पृ. ३१५ से उद्धृत
३.	हेमराज निर्मम,	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन",		पृ. ५३ से उद्धृत
४.	ब्रजभूषण सिंह आदर्श,	"हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासोंका अनुशीलन",		पृ. ३१७ से उद्धृत
५.	डॉ. हेमराज निर्मम,	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन",		पृ. ६२ से उद्धृत
६.	डॉ. हेमराज निर्मम	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन",		पृ. १०६ से उद्धृत
७.	डॉ. हेमराज निर्मम	" "वही"		पृ. १०६ से उद्धृत
८	डॉ. हेमराज निर्मम	"वही"		पृ. १०७ से उद्धृत
९	डॉ. हेमराज निर्मम	"वही"		पृ. १०७ से उद्धृत
१०.	डॉ. हेमराज निर्मम	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन		पृ. १०७ से उद्धृत

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

११.	डॉ. हेमराज निर्मम,	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन",	पृ. ११० से उद्धृत
१२.	डॉ. हेमराज निर्मम	"वही"	पृ. १११ से उद्धृत
१३.	डॉ. हेमराज निर्मम,	"वही"	पृ. १०७ से उद्धृत
१४.	डॉ. हेमराज निर्मम	"वही"	पृ. १०८ से उद्धृत
१५.	डॉ. हेमराज निर्मम	"वही"	पृ. १०८ से उद्धृत
१६८	डॉ. हेमराज निर्मम	"वही"	पृ. १०८ से उद्धृत
१७.	राही मासूम रजा,	"आधा गाँव" प्रथम संस्करण १९६६	पृ. ७७
१८.	राही मासूम रजा,	"वही"	पृ. २२२
१९.	राही मासूम रजा,	"वही"	पृ. ३५२
२०.	राही मासूम रजा,	"वही"	पृ. ३५३
२१.	राही मासूम रजा,	"वही"	पृ. ३५५
२२.	राही मासूम रजा,	"वही"	पृ. ३५५
२३.	राही मासूम रजा,	"आधा गाँव"	पृ. ३५५
२४.	राही मासूम रजा,	"आधा गाँव"	पृ. ४१२
२५.	डॉ. हेमराज निर्मम	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन",	पृ. ११४ से उद्धृत
२६.	डॉ. हेमराज निर्मम	"वही"	पृ. ११५ से उद्धृत

२७.	डॉ. हेमराज निर्मम	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन	पृ. ११७ से उद्धृत
२८.	डॉ. हेमराज निर्मम	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन",	पृ. ११७ से उद्धृत
२९.	डॉ. हेमराज निर्मम	"हिन्दी कथा साहित्य में भारत विभाजन,"	पृ. १२२ से उद्धृत

*****